यूरोपीय एकीकरण की प्रक्रिया: यूरोपीय संघ का उदय
The Process of European Integration: Rise of the European Union

द्वितीय विश्व युद्ध की विनाशकारी पृष्ठभूमि में यूरोपीय नेताओं ने यह निष्कर्ष निकाला कि स्थायी शांति केवल आर्थिक और राजनीतिक एकीकरण के माध्यम से ही संभव है। इसी विचार से यूरोपीय एकीकरण की प्रक्रिया का आरंभ हुआ, जो अंततः यूरोपीय संघ (European Union) के रूप में विकसित हुई।

1951 में यूरोपीय कोयला और इस्पात समुदाय (ECSC) की स्थापना फ्रांस, पश्चिम जर्मनी, इटली और बेनेलक्स देशों के बीच सहयोग की प्रथम ठोस पहल थी। इसका उद्देश्य युद्ध-उद्योग से जुड़े संसाधनों को साझा नियंत्रण में लाकर युद्ध की संभावना को कम करना था। 1957 की रोम संधि ने यूरोपीय आर्थिक समुदाय (EEC) की स्थापना की, जिसने मुक्त व्यापार, साझा बाजार और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा दिया।

एकीकरण की प्रक्रिया केवल आर्थिक नहीं थी, बल्कि राजनीतिक और वैचारिक भी थी। शीत युद्ध के संदर्भ में पश्चिमी यूरोप का एकीकरण साम्यवाद के विरुद्ध एक स्थिर लोकतांत्रिक ढाँचे के रूप में भी देखा गया। समय के साथ सदस्य देशों की संख्या बढ़ी और 1992 की मास्ट्रिख्ट संधि ने औपचारिक रूप से यूरोपीय संघ की स्थापना की।

यूरोपीय संघ ने साझा मुद्रा (यूरो), मुक्त आवागमन, साझा नीतियों और क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा दिया। इसके बावजूद राष्ट्रीय संप्रभुता बनाम अधिराष्ट्रीय सत्ता (Supranational Authority) का प्रश्न निरंतर बहस का विषय रहा है। इतिहासकार इसे “कार्यात्मकतावाद” (Functionalism) और “नव-कार्यात्मकतावाद” (Neo-functionalism) के सिद्धांतों से भी जोड़ते हैं।

निष्कर्षतः यूरोपीय एकीकरण आधुनिक यूरोप की सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक परियोजना है, जिसने युद्धग्रस्त महाद्वीप को सहयोग, शांति और आर्थिक विकास के मार्ग पर अग्रसर किया तथा आधुनिक वैश्विक राजनीति में यूरोप की सामूहिक भूमिका को सुदृढ़ किया।